# कामरेड फिरंगी

पहले वो सबसे ये वायदा ले लेते थेःदादा ये हमारे और आप को बीच का बात रहेगा।जइसे हम आज आप को पास आया.वइसे ओगल मास मे तोनखा पाते ही आप को पास आकर सारा टाका हॅथ पर धर जाऊँगा।

मित्रों और परिचितों के लिए हलदार बाबू का ओगल मास कभीं न आया।लोगों ने भी दो तीन सौ रूपयों के लिए वर्षो तक अपना वायदा न तोड़ा।

सात बच्चों के बाप हलदार बाबू इन्डियन स्कूल ऑफ माईन्स धनबाद मे लोअर डिवीजन क्लर्क थे और आकंठ कर्ज मे डूबे हुए थे।उन्होने अपने जीवन मे पहली बार कब कर्ज लिया था.उन्हे खुद भी याद न था।कई कर्जदार तो अगले महीने का इन्तजार कर कर के रिटायर तक हो गए थे।हलदार बाबू के लिए तो वो बड़े भले मानुष थे।बंगाल मे गोकि देवताओं की पूजा नही होती है.फिर भी हलदार बाबू के लिए वांछित कर्ज देकर उसे पाने की अपेक्षा न रखने वाला इन्सान एक देवता की तरह पूज्यनीय था।

धनबाद एक तरह से क्लर्को का शहर है।इन्डियन स्कूल ऑफ माईन्स मे ही छ सौ छात्रो पर चार सौ से भी ज्यादे क्लर्क हैं।एक छोटे से काम की फाईल पता नही कितने क्लर्को के टेबुलो से गुजरती है! एक आवेदन पत्र पर पता नही कितने फारवर्ड.अग्रसारित.बनर्जी.मुखर्जी.दास.सिन्हा.सरकार.प्रसाद.चौधरी और रामो के हस्ताक्षर होते हैं।इसके अलावे धनबाद मे ऑफिसें भी कई हैं।प्रोविडेन्ट फन्ड.मलेरिया ऑफिस बिजली ऑफिस.कोयला भवन.वेलफेयर ऑफिस.वाटर बोर्ड.म्यूनिसपैलिटी के अलावे स्कूल्स.कॉलेजेस व बैंक्स भी क्लर्को से भरे पड़े हैं।आम भाषा मे ये बाबू कहलाते हैं।इस वर्ग का सबसे बड़ा दुर्भाग्य ये है कि ये वर्ग न तो अमीर है और न गरीब।दिखावे और आडम्बर का ऐसे ही वर्ग पर पहला आक्रमण होता है और ऐसे ही जमीन पर कर्ज और घूसखोरी का बीज भी बड़ी तेजी से पनपता है।

हलदार बाबू की नौकरी मे घूस की कोई गुंजायश नही थी।हॉ ऑफिस से कलम.स्याही खाली.एन्ट्री बुक्स.पेपर वेटस वगैरह वो अपने बच्चों के लिए अवश्य पार कर लेते थे।सबसे बड़ी दो बेटियॉ थी जो अब जवान हो चली थी।बाकी के पॉच बेटों का पढाई लिखाई के प्रति कोई रूझान न था।खेलने कूदने मे सभी नम्बर एक थे।सारे के सारे उत्तम कुमार की तरह बीच से मॉग काढते थे।हलदार बाबू की पत्नी बड़ी स्नेहमयी थीं.बस पान खा खाकर वो अपनी सारी दॉते काला कर चुकी थीं।हलदार बाबू भी उत्तम कुमार की तरह बीच से ही मॉग काढते थे।सफेद धोती.सफेद कुर्ता.काले रंग का पम्पशू.बीच के उँगलियो मे फॅसी चार मीनार सिगरेट और पान चुभलाते एक पसली के हलदार बाबू दूर से ही पहचान लिए जाते थे।उन्हे कैम्पस के बाहर गोविन्दपुर रोड पर रजिस्ट्रार साहब वाले गेट के ठीक सामने एक दो कमरे का सरकारी क्वार्टर मिला हुआ था।उन्ही की कमाई से पूरे घर का खर्चा चलता था।

आए दिन उनकी रामधनी से भी झिक झिक होती थी।रामधनी के चाय और पकौड़े उन्हे बड़े स्वादिष्ट लगते थे।उसके यहॉ उनका उधार खाता चलता था।रामधनी भी कभी कभी ॲकड़ जाता था।हलदार बाबू को ये सब बड़ा अमानवीय लगता था पर जब उन्हे ये लगता था कि कहीं रामधनी अपनी भोजपुरी मे अपना आपा न खो बैठे.वो नम्र होकर उसे दस बीस टाका पकड़ा देते थेःठीक है बाबा ये राख लो।ओगल मास मे तुम्हारा पाई पाई दे मारेगा।बीस बोछर से तुम्हारा गाहक हूॅ।कितना लोग दुआरिका के पास चोला गया।मै तुम्हारा गुमटी छोड़कर आस पास पान का पीक तक थूकने नही गया।अब जाओ बाबा.एक पीला पत्ती का पान तो लगाओ।थोड़ा कत्था जादा लिपना।

रामधनी भी चुप हो जाता था।वो हलदार बाबू का अगला और कभीं न आने वाला महीना अच्छी तरह जानता था।

उनके घर का राशन हीरापुर के एक बनिये मॅगी लाल के यहॉ से आता था.जिसमे उसना चावल मुख्य होता था।इसकी उनके यहॉ खपत भी काफी थी।नौ जन खाने वाले थे।बनिये का हिंसाब किताब वो ठीक रखते थे.भले ही इसके लिए उन्हे उधार ही क्यो न लेना पड़े।सब्जियों के लिए वो धईया गेट पर आकर पहरा देते थे.जिससे होकर आदिवासी औरतें अपनी सब्जियों की टोकरी सर पर लादे गुजरती थीं।धईया गेट से हीरापुर हटिया की दूरी यही कोई चार पॉच मील रही होगी।पैदल या फिर दिन भर हटिया मे बैठने के भय से तो अच्छा था कि वो अपनी टोकरी हलदार बाबू को ही बेच दें.भले ही उन्हे थोड़े कम ही पैसे क्यों न मिले।इस तरह की सोचने वाली कोई न कोई हलदार बाबू से टकरा ही जाती थीं।मोल भाव करने मे भी वो बेहद निपुण थेःतुमि आमार गोला काटवी ना की! गाछेर टाका फोलछे ना कि रे!ःतुम मेरा गला काटोगी क्या!पैसे पेंड़ों पर फलते हैं!

तमाम क्लर्को.लेक्चररो.प्रोफेसरो से वो उधार लिए हुए थे और वापस देने के नाम पर ओगल मास कहकर सरक लेते थे।और फिर वो पैसे वापस करते भी तो कहॉ से!!तनख्वाह उनकी बॅधी बॅधाई थी।चारो ओर बस खर्चा ही खर्चा था।फिर हर वर्ष दुर्गा पूजा भी आता था।पूरे परिवार के लिए नवीन कपड़े भी बनते थे।कहीं न कहीं से कोई न कोई व्यवस्था हलदार बाबू को ही करनी पड़ती थी।हलदार बाबू कर्ज मे डूबते ही चले जा रहे थे।परिवार का खर्च  हलदार बाबू को कर्ज के दलदल मे डूबोता ही चला जा रहा था।

कर्ज लेने की मजबूरी और कर्ज लेने की प्रवृति की उनकी अपनी व्याख्या थी।उनके लिए कर्ज धन का एक समुचित बॅटवारा था।कर्ज वो ही देता है.जिसके पास आम आवश्यकता से ज्यादे धन है.और कर्ज वो ही लेता है जिसके पास आम आवश्यकता से कम धन है।बस वो आम आवश्यकता की सीमायें नही जानते थे।किफायत उनके लिए मन को मारने जैसा था और मन को मारना उनके लिए आत्महत्या जैसा घृणित और जघन्य अपराध था।

हलदार बाबू को पता था कि उनकी ये व्याख्या तर्कसंगत नही है।अपने चार मीनार का आखिरी कश खींच कर उसे वो मिनटो तक अपने पम्पशू से रौदते रहते थे.अपनी नजरे झुकाए।उनके गले की नशें तभी देखी जा सकती थीं.जब वो अपने को कोई झूठी सान्तवना देते थे या फिर तब जब उनसे अपना दिया गया पैसा अभद्र भाषा मे वापस मांगा जाता था।जब तब उनका पिताश्री वाला रोल भी भड़क उठता थाः हॉ थोड़ा बोहुत झूठ सोच तो कोरना ही पड़ता है।इस पॉच सौ की तोनखा से हम कैसे नहाएगा.कापड़ लोत्ता मॉजेगा.कुल्ली कोरेगा बोलो।सात बच्चों का बाबा हूॅ ।आमार बुतुर लोग कोब तोक बइगन खाएगा! उनको भी कोंभी कोभी रोहू माछ का याद आता है।

हीरापुर हटिया से जब हलदार बाबू अपने हॉथ से दो रोहू माछ लटकाए घर की तरफ बढते थे तो पूरे धनबाद मे ये बात बिजली की तरह फैल जाती थीः फिर काटा हलदरवा ने किसी का गला

वर्षो तक हलदार बाबू छुपे से रहे पर कब तक छुपे रहते!

नए स्टाफ को स्टेशन से पहले की ढलाऊ सड़क की छीना झपटी से सत्तर्क तो किया ही जाता था फिर दूसरे नम्बर पर आते थे हलदार बाबू। धीरे धीरे उन पर फन्दे कसते ही जा रहे थे। अब उन्हे अपनी बदनामी की भी खास परवाह न थीः होम ओपना बोदनामी देखेगा कि ओपना घोर पोरिवार!

मिलनसार तबियत उनकी सदा रही और बनी भी रही। गरीबों भिखमंगों के हॉथो पर वो एक अधेला रखें या न रखें पर उनका दुख दर्द वो बड़े मन से सुनते थे। कभीं कभीं वो भिखमंगों को रामधनी की दुकान से एकाध पावरोटी भी दिलवा देते थे। पैसे वो अपने उधार खाते मे चढवा देते थे। रामधनी भड़क उठता थाः गॉड़ मे गूह नाहीं कऊअन के नेवता। ऊपर से फिटफाट नीचे से मोकामाघाट!

हलदार बाबू मे भी बड़ा धैर्य था।

तुम हमारा पुल खोलेगा ना कि रे!

मॅहगाई और बनियो को तो वो आए दिन बंगाली मे पचपन गालियॉ देते थे। और तो और किसी ने अपना दिया पैसा मॉगा नही कि सोच मे कोलजुग आ गिया रे बाबा। लास पोर पॉव धोरकर सोब चोलना मांगता है। ःसच मे कलयुग आ गया है। सब एक दूसरे की लाशों पर पैर रख कर चलना चाहते हैं। ः

ऐसा भी नही था कि पूरे धनबाद मे हलदार बाबू ही एकमात्र कर्जखोर थे। इस शहर मे तो मुझे कभी कभी ऐसा लगता था जैसा पूरा काबुल ही यहॉ आ बसा है। हर दफ्तर के आगे की गुमटियों मे मुझे सिर्फ काबुलीवाले ही नजर आते थे। ये पूरे धनबाद मे बिखरे पड़े थे। ढीले ढाले कुर्त्ते पैजामे व नक्काशीदार जैकेटो मे लम्बे तगड़े काबुलीवालों के सूद का धन्धा धनबाद मे पनपा हुआ था। इनमे से कईयो को तो हिन्दी भी नही आती थी फिर भी अपने मात्र दो शब्दो मोल और सोद से अपना धन्धा चला रहे थे। इनके इलाके दफ्तर और गाहक भी बॅटे हुए थे। सिर्फ अपवाद मे ही किसी को एक ही साथ दो काबुलीवालो से कर्ज मिल पाता था। आते तो थे ये सरकार की अनुमति पर परन्तु सूद की दर ये खुद ही तय करते थे। पता नही इन्हे सरकार, कचहरी या पुलिस से कितना संरक्षण मिला हुआ था, पर उनकी डीलडौल और छुरों से इन क्लर्को को सदा डर लगा रहता था। लोग इनसे कर्ज तो लेते थे पर इनकी छाया से भी घबराते थे। काबुलीवालो से दुआ सलाम का सीधा मतलब था कि आपने उनसे कर्ज ले रखा है। ये तो बड़े शरम की बात है। एक दफ्तर का बाबू इनसे किसी दूसरे दफ्तर के सामने की गुमटी मे कर्ज लेकर किसी तीसरे दफ्तर के सामने की गुमटी मे समय से सोद पहॅुचा आता था। सिर्फ इस भय से कि कहीं साला हमारे दफ्तर के आगे की गुमटी मे आकर चाय न पीने लग पड़े। कितनी बदनामी होगी!इतना भय था इन क्लर्को को अपनी बदनामी का।

इन्ही काबुलीवालो मे से एक था वख्त खॉन, जिसके इन्डियन स्कूल माईन्स के कई बाबू चौकीदार माली मजदूर ग्राहक थे। धनबाद मे वो कई वर्षो से था और हिन्दी भी टूटी फूटी बोल लेता था। सुबह से शाम तक हमारे घर के पीछे रामधनी की दुकान पर उसका अडा होता था। उसके पास एक रेले की चमचम करती सायकल थी। सिल्क के रंग बिरंगे कुर्त्ते पैजामे और नक्काशीदार जैकेट मे उसकी लम्बी चौडी काया, छाती तक बढी सुनहरी दाढी मुझे अपने बचपन के दिनो मे बड़ी सुहाती थी। अक्सर मै मॉ की नजर बचाकर उससे अपने गेट पर एक लेमनचूस ले लेता था। गेट से अन्दर आने की उसने कभी हिम्मत न की। बच्चो को चुराकर काबुल मे बेच देने की लोक भ्रान्ति धनबाद मे पुरानी हो चली थी। इनके बच्चो से नाजायज सम्बन्ध एक दूसरी लोक भ्रान्ति थी।

कॉलेज मे आ जाने के बाद मै इसी वख्त खॉ से एक बार पुराने बाजार मे मिला और उसके साथ उसके घर भी गया। पुराने बाजार के सब्जीमंडी मे एक बैरकनुमा पुराने गन्दे खपरैल बैरक के एक कमरे मे वो एक और काबुलीवाले के साथ रहता था। इस बैरक मे यही कोई दस बारह कमरे थे और एक लम्बा सा बरामदा जिसके एक कोने मे ईटो से घिरा एक बालू से भरा घेरा था, जहॉ एक मिट्टी का बड़ा सा ढक्कनदार घड़ा रखा हुआ था। पास ही एक लकड़ी की पुरानी नम मेज थी जिसपर पीतल की एक हैन्डिलदार कटोरी उठॅगी पड़ी थी। इस पुराने सीलन भरे बैरक के किसी भी कमरे मे कही भी खिड़कियॉ न थी। दिन के प्रकाश मे भी हर कमरे व बरामदे मे बिजली के बल्ब जल रहे थे। दीवारो के पलस्तर तक गायब थे। वख्त के कमरे मे दो चौकियॉ थी, जो ईटो पर रखकर ऊॅची की गई थीं। एक खूॅटी पर वख्त व उसके साथी के कपड़े लटक रहे थे। कमरे मे दो छोटी तिजोरियॉ भी थीं। वख्त चारखाने की एक हरी लुन्गी और पूरे बॉह की बनियाइन पहने था। पूरा बरामदा सायकलो से खचाखच भरा पड़ा था। इस बैरक मे सिर्फ काबुलीवाले ही रहते थे। इनके पास एक बूढा मुसलमान नौकर था जो बरामदे के दूसरे छोर पर बकरो के खूरों की निहारी और मोटे मोटे नान की रोटियॉ सेंकने मे व्यस्त था।

वख्त बयालीस साल का था, पर उसने शादी न की थी। अभी तक के अपने कमाये या बचाये पैसो से वो संतुष्ट न था। सब्जीमंडी के एक गुमटी पर उसके साथ एक स्पेशल चाय पीकर मै घर वापस आ गया।

वख्त भी हलदार बाबू की बातो या उनके झॉसो मे आकर उन्हे पॉच हजार रूपया सूद पर दे दिया। हर महीने सूद के ही पॉच सौ रूपये बनते थे जो हलदार बाबू की तनख्वाह थी। वख्त ही नही हलदार बाबू भी अपने जीवन की सबसे भयंकर गलती कर चुके थे।

हमारे घर के आस पास की सड़को पर धनबाद म्यूनिसिपैलिटी का एक मेश्तर झाड़ू लगाया करता था। था तो वो छोटे कद का पर मूछें उसकी इतनी बड़ी थी कि उसके ओंठ तक न दिखते थे। उसकी पत्नी भी म्यूनिसिपैलिटी मे ही काम करती थी। सप्ताह मे दो बार वो हमारे घर का पाखाना साफ करने आती थी। बिना हैन्डिलो के चनके कप मॉ इन्ही लोगो के लिए रखी थी, जिनमे आए दिन इन्हे चाय के साथ बासी रोटियॉ और पराठे मिल जाते थे। मॉ की छोड़ी साड़ियॉ, बाबूजी की पुरानी कमीजे भी इन्हे मिल जाती थी। होली और दीवाली पर मिठाईयॉ और बख्शीस तो ये साधिकार वसूलने आते थे। नाश्ता पानी करके बगान के एक नलके पर अपनी कपे धोकर अपनी गन्दी अंगोछी या साड़ी के पल्ले से पोछकर बगान से ही लगे एक कमरे के ताखे पर रखकर ये चले जाते थे। हमारे पाखाने और घर के अगल बगल की सड़के चमकती रहती थी। इस मेश्तर का नाम फिरंगी था और उसके पत्नी का सोनपतिया। ये भी रामधनी के अटूट गाहक थे। ये दोनो निःसंतान थे। पुलिस लाईन के ठीक सामने डोमपाड़ा मे उन्हे एक कमरे का सरकारी पक्का मकान भी मिला हुआ था, जिसमे उनके पाले सूअर रहते थे। ये बगल मे ही अपनी बनाई हुई झुग्गी मे रहते थे। दिन भर झाड़ू लगाकर लोगो के पाखाने साफ कर शाम को महुए या मॉड़ की शराब पीकर अपने चिथड़ो मे सो जाते थे पर सोने से पहले नियम से एक दूसरे की मॉ बहन करना कभी न भूलते

थे। यही थी इनकी जिन्दगी।
हलदार बावू दस बीस टाका देकर वख्त को महीनो टालते रहे पर वख्त रामधनी नही था। वख्त लोगो की मजबूरियॉ समझता था और उन्हे महीनो की मुहलते भी दे देता था। हलदार बावू को उसने कहा भीःमुझसे तुम्हे जितनी भी मुहलत चाहिये ले लो। अपने इन दस बीस रूपयो मे मुझे मत उलझाओ। हर धन्धे का एक उसूल होता है। तुमको चलो हम एक महीने का मुहलत और देता है। पर हलदार बावू को तो एक कभी न बितने वाली मुहलत चाहिए थी। फिर हर महीने पॉच सौ रूपये महज सूद का वो लाते भी कहॉ से!
इन्ही दिनो अचानक उनका देशप्रेम भड़का। अव वो रामधनी की दुकान पर बैठ कर घंटो अन्ग्रेजो को गालियॉ देते थेःसाला हमरा खून चूस मारा. हमरा सारा गुल्ड चुरा मारा. भारतमा को सालो तोक बेड़ी मे बाध को रक्खा! सुबास बावू गुली खाया. चितरोंजन ओपना भोकालत छोड़ा. गान्धी लोंगोटी पोहिना। देश तो कोई रोकोम आजाद हो गिया फिर भी ये बिदेसी लोग हमरा जान नही छोड़ा रे।ःसाले हमारा सारा खून चूस मारे। हमारा सारा सोना चुरा मारे। भारत मॉ को सदियों तक बेड़ियों मे बॉधे रखे। सुबास बावू गोली खाये. चित्तरंजन अपनी वकालत छोड़े गान्धी लंगोटी पहने। हमारा देश किसी तरह आजाद तो हो गया. फिर भी ये बिदेशी लोग हमारी जान नही छोड़े।
हलदार बावू का इन दिनो सबसे बड़ा बिदेसी दुश्मन वख्त जो था। फिरंगी और सोनपतिया पत्ते पर रामधनी के पकौड़े लिए हलदार बावू का भाषण रामायन की तरह पूरी तान्मयता के साथ सुनते थे।
अव वख्त के पास धैर्य नही रहा। हलदार बावू उसे ओगल मास कहके टाले जा रहे थे। फिर आया एक निर्णायक दिन। हमारे घर के सामने एल ब्लॉक हॉस्टल के ठीक पहले वाली पुलिया के पास वख्त हलदार बावू को धर दबोचा। गर्मा गर्मी हुई. हलदार बावू भी अॅकड़ गए। अव तक धनबाद मे किसी ने इतनी हिम्मत न की थी और ये साला बिदेसी उनकी इज्जत सरे आम निलामी पर लगाने के पीछे पड़ गया था। हलदार बावू के गले की सारी नसे तन गई जो उॅगलियो पर भी गिनी जा सकती थींःतुमलोग सालों सोदियों तक हमारे भारतमा का ओपमान किया! हम बोच्चा था. तुमको गुली नही मारा। ओव मै जोवान हूॅ। तुम साला विदेसी लोग कोव तोक हमरा खून चूसेगा रे!एक पसली के हलदार बावू का क्रान्तिकारी बंगाली खून खौल रहा थाःतुम्हारा सारा मूल मै ओगल मास मे तुम्हारे मुॅह पोर मारेगा। होलदार ओपना जोवान से कोभीं नही फिरा. ये पूरा धोनवाद जानता है। रामधनी भी पास ही खड़ा था। लम्बा सा तान कर उसने हलदार बावू के कहे पर अपने बेशक की मुहर लगा कर अपनी मूछों मे मुस्कराने लग पड़ा।
वख्त भी गरम हुआ। उसके नथुने फूल उठे। अव तक जितनी हिन्दी उसे आती थी. अपने गुस्से मे भूल चुका था। पच्चासों की भींड़ जमा हो गई थी .जिनमे फिरंगी भी था. हॉथ मे नारियल का झाड़ू थामे। वख्त हलदार बावू का गिरेबान पकड़ लियाःतुम हमको साला बोला। मोल न लेगा सोद लेगा. हम सोद लेगा।
फिरंगी सोद को कुछ और ही समझ कर ललकारते वख्त पर चढ बैठाःके के सोदवा हो!बावू के बिटियन के!मार के झाड़ू के मूठ से अभीं तोहार जवानी ढील कर देत हई. कहते हुए वो वख्त पर झाड़ू बरसाना शुरू कर दिया। हलदार बावू अव भींड़ मे दर्शक थे। उनके कुर्त्ते की एकाध बटन टूट गई थी .वालों के लट चेहरे पर झूल रहे थे। वख्त हतप्रभ खड़ा था. फिरंगी अपने झाड़ू की मूठ से वख्त को मारे जा रहा थाः. तू बावू के बिटियन के सोदवा अन्ग्रेज होके. तोहरे महतारी क...
मार साले को का एक समवेत स्वर भींड़ से भी आ रहा था। वख्त के दॉयी ऑख के नीचे का चमड़ा थोड़ा फट गया था। वहॉ से खून की दो चार बूॅदे टपककर उसकी लम्बी सुनहरी दाढी मे तिरोहित हो रही थीं। हलदार बावू बार बार बस यही कहे जा रहे थेःसुवास ओभी मोरा नही है. सुवास को कौन मारेगा रे!
कारखाने का भरथू वख्त के सायकल के पहियों की हवा निकाले जा रहा था और वो भी वेन्टिल समेत. अपनी खटारे सयकल के वास्ते।
काबुलीवालों के वर्षो से किये जाने वाले शोषण के खिलाफ पूरे धनवाद व समीपवर्त्ती अन्चलो मे ये पहला विद्रोह था या विद्रोह का प्रारम्भ था। देखते ही देखते मेश्तर फिरंगी कामरेड फिरंगी बन बैठा___

प्रमोद कुमार सिंह